मऊगंज

पति के दोस्त से दिल लगाकर मिटा दिया सुहाग

प्रेमिका की साजिश पति का कत्ल

demo pic.

सतना जिला चिकित्सालय के मरीजों को प्राइवेट ऐम्बुलेंस की सेवा देने वाला सुधीर समय-समय पर गैर कानूनी तौर पर पैसा कमाने से पीछे नहीं हटता था। जिसके चलते उसकी दोस्ती इलाके के दो अन्य बदमाश बाबा और गबरू से हो गई थी। समय के साथ गबरू का दिल सुधीर की खूबसूरत पत्नी चांदनी पर आ गया जो सुधीर की हत्या का कारण बना।

रोने का नाटक करती आरोपी पत्नी

आरोपी गबरू और बाबा

बाबा के कहने पर रंजना ने करवाई थी गबरू और चांदनी की दोस्ती

मृतक सुधीर दाहिया और दोनों मुख्य आरोपी गबरू तथा बाबा आपराधिक प्रवृत्ति के हैं। तीनों की पहली मुलाकात जेल में हुई थी जहां हुई दोस्ती जेल से बाहर आकर और गहरी हो गई थी। बाबा अक्सर गबरू को लेकर अपनी प्रेमिका रंजना से मिलने जाता था। इस दौरान गबरू को बाहर के कमरे में सुलाकर खुद बाबा प्रेमिका के साथ सोता था। इससे गबरू के मन में भी प्रेम की आग जलने लगी थी। इसी बीच एक रोज उसने सुधीर की पत्नी चांदनी को देखा तो उसका दीवाना हो गया। दोस्त की मदद करने के लिए बाबा ने अपनी प्रेमिका से कहा जिसके बाद रंजना ने चांदनी से दोस्ती करने के बाद मस्ती करने के नाम उसके अवैध रिश्ते गबरू से बनवा दिए थे।

अस्पताल के वार्ड बॉय से मिला सुराग

सुधीर की हत्या का मामला पुलिस के लिए सिरदर्द बनता जा रहा था। ऐसे में जिस अस्पताल के बाहर सुधीर अपनी ऐंबुलेंस लेकर खड़ा होता था वहां पूछताछ करने पर एक वार्ड बॉय ने बताया कि एक बार सुधीर की पत्नी बीमारी के चलते अस्पताल में भर्ती हुई थी तब उससे गबरू नाम का एक युवक अक्सर मिलने आता था। उसने पुलिस को यह भी बताया कि गबरू चांदनी ने मिलने आने के दौरान कंबल में हाथ डालकर चांदनी के शरीर से छेड़छाड़ करता था और चांदनी मुस्कराती रहती थी। इसी आधार पर पुलिस ने चांदनी को घेरा तो पूरी कहानी खुलकर सामने आ गई।

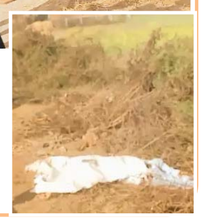
घटनास्थल पर पड़ा सुधीर का शव एवं जानकारी लगने पर जुटी गांव वाली की भीड़ तथा जांच करती पुलिस

30 दिसंबर की उस सुबह, मऊगंज जिले के डगडौआ गांव के पास सर्द कोहरे ने सब कुछ ढंक रखा था। ऐसे में करीब सात बजे, गांव का एक युवक साइकिल पर सब्जी लेकर लौट रहा था। तभी कोहरे में उसकी नजर सड़क किनारे पड़ी एक बोरी पर पड़ी। उसे कुछ अजीब सा लगा इसलिए वह उत्सुकतावश बोरी के करीब गया। नजदीक से देखने पर पहले कुछ समझ नहीं आया, लेकिन जैसे ही उसने मोबाइल की टार्च ऑन कर देखा तो बोरी के बजाए खून से सने एक युवक को पड़े देखकर उसका चेहरा डर के कारण सफेद पड़ने के अलावा मुंह से चीख निकल गई जिसे सुनकर आसपास के खेतों में काम शुरू करने जा रहे मजदूर और गांव वाले वहां जमा हो गए। शव एक युवक का था। चेहरे और शरीर पर धारदार हथियार के बेतरतीब, गहरे घाव थे, जिससे स्पष्ट था कि हमलावर हत्या का इरादा लेकर आया था। सन्नाटे और डर के बीच, ग्राम प्रधान को सूचना दी गई और उन्होंने मऊगंज थाने में फोन कर इसकी जानकारी दे दी।

खबर पाकर पुलिस ने शीघ्र ही मौके पर पहुंचकर पूरे इलाके को घेर लिया। फॉरेंसिक टीम ने सावधानी से सबूत जुटाए। शव के पास से कोई पहचान पत्र नहीं मिला, सिर्फ एक सस्ता मोबाइल फोन, जिसका सिम कार्ड निकाल लिया गया था वहां पड़ा था। शव का पंचनामा बनाकर उसे पीएम के लिए भेज दिया गया। अब पुलिस के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी इस बेहद बुरी तरह क्षत-विक्षत चेहरे वाले युवक की पहचान करना।

31 दिसंबर की दोपहर, सतना जिले के टिकुरिया टोला मोहल्ले में एक मकान के बाहर उदासी छाई थी। पुलिस की गाड़ी आई और उन्होंने रमेश दहिया नाम के एक बुजुर्ग को अपने साथ चलने को कहा। रमेश दाहिया का बेटा सुधीर उर्फ लाला, जो एक निजी एंबुलेंस चालक था, पिछले दो दिन से लापता था। रमेश ने उसकी शिकायत थाने में दर्ज करवाई थी इसलिए पुलिस को शक था कि कहीं वह शव रमेश के बेटे सुधीर का तो नहीं। मर्चुरी में लाश देखते ही रमेश दहिया उसे लिपट कर अपने बेटे का नाम लेते हुए फूट-फूट कर रोने लगे। शव की पहचान सुधीर उर्फ लाला के रूप में हो जाने से

आरोपी रंजना तथा आरोपी पत्नी

पुलिस ने जांच का काम आगे बढ़ाया।

32 साल का सुधीर दहिया वैसे तो पेशे से एंबुलेंस चालक था लेकिन पुलिस रिकॉर्ड में उसका नाम चोरी, मारपीट और शराब तस्करी के कई मामलों में दर्ज था। वह सतना जिला अस्पताल के बाहर एंबुलेंस खड़ी रखता, मरीजों को लेने-छोड़ने का काम करता। पैसे कमाने के लिए वह कभी-कभार गैरकानूनी रास्ते भी अख्तियार कर लेता था। सुधीर की बेहद खूबसूरत पत्नी चांदनी (बदला नाम) मूल रूप से प्रयागराज की रहने वाली। करीब 12 साल पहले उनकी शादी हुई थी और दोनों की एक बेटी भी थी। पड़ोसियों के मुताबिक, सुधीर नशे में अक्सर चांदनी की पिटाई करता था। आसपास के लोगों को चांदनी से सहानुभूति थी लेकिन सुधीर के उग्र स्वभाव के कारण कोई उनके झगड़े के बीच में नहीं बोलता था।

पुलिस ने रमेश दहिया से पूछताछ की। उन्होंने बताया कि सुधीर 29 दिसंबर को रीवा जाने के लिए घर से निकला था। उसने कहा था कि कोई बड़ा काम है जिसमें अच्छे पैसे मिलेंगे। रीवा जाते समय उसने चोरहटा बायपास पर अपने जीजा से मुलाकात की, फिर दो दोस्तों के साथ चला गया। उसके बाद से उसका कुछ पता नहीं था।

शेष पृष्ठ 7 पर...

शव की पहचान की खबर फैलते ही चांदनी भी मऊगंज पहुंची। वह सफेद साड़ी पहने, बुरी तरह रोती-बिलखती हुई, शव के पास लेट गई। उसका दुःख देखकर किसी का दिल पसीज जाता। उसने पुलिस से कहा कि उसका पति बुरी संगत में पड़ गया था और शायद किसी दुश्मन ने उसे मार डाला। उसने अपने पति के आपराधिक रिकॉर्ड की ओर इशारा किया और कहा कि उसे तो कुछ पता नहीं।

लेकिन मऊगंज पुलिस, खासकर एसडीओपी सची पाठक की नजर में कुछ बातें बिल्कुल ठीक नहीं बैठ रही थीं। पहला, हत्या इतनी जघन्य थी कि यह महज झगड़े या बदले की वजह से नहीं लगती थी, बल्कि पूरी प्लानिंग के साथ की गई साजिश लग रही थी। दूसरा, चांदनी का रोना-धोना थोड़ा ज्यादा नाटकीय लग रहा था। तीसरा और सबसे अहम, सुधीर का मोबाइल, जो शव के पास मिला था, उसकी कॉल डिटेल कुछ रहस्यमय नंबर सामने आए।

पुलिस ने पाया कि हत्या से ठीक पहले और बाद में, सुधीर के मोबाइल से एक विशेष नंबर पर कॉल्स हुई थीं। उस नंबर का पता लगाया गया तो वह प्रयागराज के एक युवक बाबा और सतना के एक युवक गबरू उर्फ अजान से जुड़ा था। हैरानी की बात यह थी कि हत्या के कुछ मिनट बाद, सुधीर के फोन से उसकी पत्नी चांदनी के फोन पर एक कॉल गई थी, जिसकी अवधि महज 22 सेकंड थी। यह कॉल किसने किया था। सबसे बड़ी बात यह कि पति की हत्या की जानकारी लगने के बाद भी चांदनी आधी रात में आए पति के इस फोन के बारे में पुलिस को कुछ नहीं बता रही थी। जाहिर सी बात है कि चांदनी इस बात को लेकर शक के दायरे में आ गई।

सत्यकथा

फरीदाबाद : शूटिंग कोच ने होटल ले जाकर किया ट्रेनी नाबालिग संग बलात्कार

शौकिया खेल तन को ताजगी और मन को खुशी देते हैं जबकि प्रोफेशनल खेलों में पैसा और नाम तो है लेकिन खेलों का यह संसार शारीरिक थकान के अलावा मन को तनाव और कभी-कभी ऐसे घाव दे जाता है जो जिंदगी भर नहीं भरते। दरअसल प्रोफेशनल स्पोर्ट्स में खिलाड़ी की योग्यता को दूसरा और कोच की 'पहुंच' को पहला स्थान दिया जाता है। इसीलिए कुछ कोच खेलों में उभरती प्रतिभाओं को उसका कैरियर बर्बाद कर देने की धमकी देकर शोषण करने में सफल हो जाते है, फिर अगर ऐसी उभरती प्रतिभा खूबसूरत युवती है तो शोषण का सबसे घिनौना और शर्मनाक रास्ता अपनाने में भी कई कोच पीछे नहीं हटते।

मा लूम नहीं इस लड़की को क्या हो गया है। आजकल बाथरूम में घुसती है तो निकलने का नाम ही नहीं लेती। लोग सर्दी में मर रहे है और इसको इस सर्द मौसम में घंटो नहाने का शौक लग गया है, अपने आप से बातें करते हुए 16 वर्षीय बेटी निशा की चालीस वर्षीय मां सीमा ने बाथरूम का दरवाजा पीटते हुए बेटी को जल्द बाहर आने को कहा। लेकिन संयोग से उस रोज शायद निशा अंदर से दरवाजा बंद करना भूल गई थी इसलिए दरवाजे पर मां के हाथ की दबाव पड़ते ही दरवाजा खुल गया तो मां अंदर का नजारा देखकर चौंक गई।

लगभग आधा घंटे पहले बाथरूम में नहाने के लिए गई उनकी बेटी बाथरूम में नहाने के बजाए जार-जार रो रही थी उसने हथेली से अपना मुंह दबा रखा था ताकि उसके रोने की आवाज बाहर न जाए। निशा ने उस वक्त शरीर के ऊपरी हिस्से में कुछ भी नहीं पहना था इसलिए जब मां को बेटी के कंधों के नीचे वाले हिस्से पर नाखून से खरोंचे जाने और दांतों से काटे जाने के काले पड़ चुके निशान दिखे तो वह मानों पत्थर की बन गई हों।

सोलह साल की मासूम बेटी की यह हालत देखकर मां का कलेजा मुंह को आ गया। जवानी के दरवाजे पर खड़ी लड़की का घर वालों से छुपकर रोना गहरा अर्थ रखता है। इस बात का आभास निशा की मां को था फिर उसके शरीर के नाजुक अंग पर किसी भेड़िये द्वारा छोड़े गए निशान सारी कहानी बयां कर रहे थे। इसलिए वह बेटी को गले लगाते हुए उसे बाथरूम से बाहर लाई और कमरे में पड़ी कुर्सी पर बैठाते हुए कुछ पूछने से पहले उसे यह भरोसा दिलाया कि पूरा परिवार उसके साथ है इसलिए किसी भी मुसीबत को अकेले सहन करने और परिवार से छुपाने की कोई जरूरत नहीं है।

शेष पृष्ठ 4 पर...

demo pic.

ग्वालियर

शक्की पति ने कर दी शिक्षिका पत्नी की हत्या

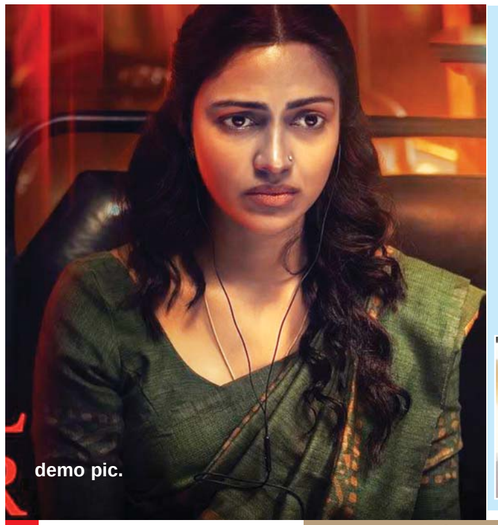

मृतका की सास

मृतका

आरोपी पति

लाइलाज शक

"पति की सीमित और अनियमित आय से होने वाली आर्थिक तंगी से निपटने के लिए रानी ने एक स्कूल में शिक्षिका की नौकरी करना शुरू कर दिया था। बेल्कर पति को पत्नी का अपने से ऊंचा ओहदा रास नहीं आ रहा था इसलिए पत्नी की नौकरी छुड़ाने के लिए जब उसके दूसरे उपाय सफल नहीं हुए तो उसने रानी के चरित्र पर अंगुली उठाना शुरू कर दिया था। इसके बावजूद बच्चों का भविष्य संवारने के लिए रानी ने नौकरी नही छोड़ी तो एक रात शक्की पति ने ...

हत्या के बाद खरीदकर लाया शराब की बोतल

शायद ऐसा पहली बार हुआ है जब एक पति अपनी पत्नी की हत्या करने के बाद बाजार शराब खरीदने गया। इस मामले में यही हुआ। धर्मेन्द्र पुलिस के आने के पहले बाजार भाग गया था वहां से वह शराब खरीदकर पीछे के दरवाजे से अंदर आया और एक कमरे में बैठकर शराब पीता रहा जबकि बाहर कमरे में पुलिस अपनी कार्रवाई करती रही।

इसी लिए लोग जोड़ी मिलाकर शादी करते हैं

आरोपी को घटनास्थल पर लेकर गई पुलिस

द स दिसंबर की रात के कोई 10 बजे का समय था। ग्वालियर के इंदरगंज थाना क्षेत्र का खटीक मोहल्ला' नींद में डूबा चुका था। सड़कें सुनसान, दुकानें बंद, और घरों की बत्तियां धीरे-धीरे बुझती जा रही थीं। इसी मोहल्ले के मकान नंबर 45 में रहने वाला धर्मेंद्र मौर्य अपनी पत्नी रानी, दो बच्चे और बूढ़ी मां के साथ रहता था। साल भर पहले तक जब रानी घरेलू महिला थी, सब कुछ सामान्य था लेकिन परिवार की आर्थिक तंगी से निपटने रानी ने एक निजी स्कूल में बच्चों को पढ़ाना क्या शुरू किया अविश्वास और संदेह की जहरीली बेलें धीरे-धीरे पूरे परिवार की खुशहाली पर छा चुकी थी।

45 की हो चुकी रानी (बदला नाम), 20 साल की उम्र में 25 साल पहले धर्मेन्द्र की पत्नी बनकर उसकी जिंदगी में आई थी। परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण रानी को शिक्षिका की नौकरी करनी पड़ती थी। सुबह सात बजे वह घर से निकलतीं और शाम को 5 बजे लौटतीं।

रानी मेहनती और ईमानदार थी इसलिए स्कूल स्टाफ और बच्चों सभी उसे प्यार और सम्मान देते थे। लेकिन पति का संदेह उनके जीवन में विष घोल रहा था। रानी की सबसे बड़ी इच्छा थी कि उसके बच्चे अच्छी शिक्षा पाएं और आगे बढ़ें।

धर्मेंद्र मौर्य की उम्र 48 वर्ष थी। उसकी नियमित आय नहीं थी लेकिन शराब पीना उसका रोज का नियम था। शराब पीने के बाद वह थकी हारी पत्नी को अपनी हवस पूरी करने के लिए कहता तो रानी अक्सर उसकी बात टाल देती थी क्योंकि उसे सुबह जल्दी उठकर स्कूल जाना होता था। इससे धर्मेन्द्र का शक और भी गहराता जा रहा था कि रानी ने किसी गैर मर्द से रिश्ता बना लिया है जिसके साथ वह अपनी शारीरिक जरूरत पूरी कर उससे मुंह फेरने लगी है। धर्मेन्द्र का यह संदेह धीरे-धीरे एक ऐसे जुनून में बदल गया था जिसने उनकी सोचने-समझने की शक्ति ही छीन ली थी। उसको लगने लगा था कि किसी रोज रानी उसे छोड़कर चली जाएगी। इस भय ने धर्मेन्द्र के मन में हिंसा के बीज बो दिए जिसके चलते वह रानी के साथ बात-बात पर मारपीट करने लगा।

रानी का बेटा 18 और बेटी 12 साल की हो चुकी थी। मां के प्रति पिता का यह व्यवहार दोनों को जरा भी रास नहीं आता था मगर वे मजबूर थे। खुद धर्मेन्द्र की मां भी अपनी बहू की इस स्थिति से दुखी रहती थी। लेकिन बूढ़ी होने के कारण कुछ कर नहीं पाती थीं।

धीरे-धीरे धर्मेन्द्र पत्नी की जासूसी करने लगा। वह घटना के बाद मोहल्ले के लोगों का कहना है कि रानी और धर्मेन्द्र का कोई मेल नहीं था। रानी पढ़ी लिखी भी थी और धर्मेन्द्र की तुलना में बेहद सुंदर भी। शायद इसीलिए धर्मेन्द्र के मन में हीन भावना आ गई थी। अपनी इसी भावना को दबाने के लिए वह रानी के चरित्र पर अंगुली उठाकर उसे नीचा दिखाने की कोशिश करता था। लोगों का कहना है कि इसीलिए लोग लड़का-लड़की की जोड़ी मिलाकर शादी करते है ताकि बाद में ऐसी घटनाएं सामने न आए।

स्कूल से दूर खड़ा होकर रानी पर नजर रखने लगा। ऐसे में रानी अगर किसी सहकर्मी से बात करते दिख जाती तो उस रात वह शराब पीकर आने के बाद रानी के साथ खूब मारपीट करता। इसी बीच एक ऐसी घटना घटी की धर्मेन्द्र ने अपना आपा ही खो दिया। एक रोज रानी की साइकल खराब हो जाने के कारण वह एक सहकर्मी के साथ उसकी मोटर साइकल पर बैठकर घर लौटी। धर्मेन्द्र ने यह देखा तो उसे लगा कि यही उसकी पत्नी का प्रेमी हो सकता है।

रात में धर्मेन्द्र ने पत्नी से उस युवक के बारे में पूछा। रानी ने बताया कि वह स्कूल का चपरासी है और उस दिन उसकी बाइक पर इसलिए बैठी क्योंकि उनकी साइकिल का टायर पंचर हो गया था। लेकिन धर्मेंद्र को यह स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं लगा। उन्होंने रानी से उस युवक का नाम पूछा, लेकिन रानी ने नाम नहीं बताया। उस दिन के बाद से दोनों के बीच लगातार झगड़े होने लगे। रानी की कोशिश होती कि वह स्थिति को शांत करें, लेकिन धर्मेंद्र का व्यवहार बिगड़ता जा रहा था।

घटना से दो दिन पहले, धर्मेंद्र ने रानी के कुछ कपड़े और उनकी डायरी जला दी थी। रानी ने इसकी शिकायत अपने भाई राजेश से की थी, लेकिन उन्होंने रानी को समझाया था कि वह धैर्य रखें।

घटना दिनांक को रानी का दिन सामान्य तरीके से शुरू हुआ। वह सुबह सात बजे स्कूल के लिए निकल गईं। उस दिन स्कूल में पेरेंट्स-टीचर मीटिंग थी, इसलिए रानी को देर हो गई। रानी के लेट होने से धर्मेन्द्र का दिमाग घूम गया उसे लग रहा था कि रानी छुट्टी के बाद अपने आशिक के साथ मस्ती कर रही होगी। धर्मेंद्र उस दिन शाम को शराब पीकर आया था वह उस रोज रानी से आर-पार का हिसाब करना चाहता था लेकिन रानी थकान के कारण जल्दी सोने चली गईं। इससे उसे पूरा भरोसा हो गया कि आज रानी ने मस्ती की है इसलिए वह थक गई है।

रात करीब दस बजे, जब घर में सन्नाटा पसरा हुआ था, धर्मेंद्र ने रानी को उठाया। उन्होंने फिर से उस युवक के बारे में पूछा। रानी ने कहा कि वह थकी हुई हैं और इस विषय पर अब चर्चा नहीं करना चाहतीं। यह बात धर्मेंद्र को बिल्कुल पसंद नहीं आई। धर्मेंद्र ने रानी को बिस्तर से खींचकर उठाया। तू मुझे सच बता, वह आदमी कौन है? तेरे साथ क्या रिश्ता है?

रानी ने हाथ जोड़कर कहा, मैंने तुम्हें सौ बार बता दिया है। वह स्कूल का चपरासी है। उस दिन मेरी साइकिल खराब हो गई थी, इसलिए उसने मुझे छोड़ दिया।

झूठ! तू झूठ बोलती है! मैंने देखा है, तू उसके साथ बातें करती है। आज भी तू उससे मिलने के कारण घर देर से आई है। रानी ने धर्मेन्द्र की बात सुनी तो गुस्से से लाल हो गई। लेकिन वह बात शांत करने के लिए पीठ फेर कर सोने की कोशिश करने लगी। इससे धर्मेंद्र का गुस्सा और बढ़ गया। उन्होंने रानी को जोर का धक्का दिया। रानी दीवार से टकराईं। इस समय तक झगड़े की आवाज़ ऊपर मंजिल तक पहुंच चुकी थी जहां बच्चे और दादी सोने की कोशिश कर रहे थे।

इधर झगड़ा और तेज हो गया। धर्मेंद्र ने आसपास देखा। उनकी नजर कपड़े धोने की मोगरी पर पड़ी। उसने बिना कुछ सोचे-समझे मोगरी उठाई और रानी के सिर पर वार कर दिया। पहला वार इतना जोरदार था कि रानी चीख नहीं पाई। वह जमीन पर गिर पड़ीं।

नशे में डूबे धर्मेंद्र ने दूसरा वार किया। फिर तीसरा। वह बार-बार मोगरी से रानी के सिर पर प्रहार करता रहा जब तक की रानी की मौत नहीं हो गई। रानी का शरीर शांत हुआ तो डर के कारण मोगरी धर्मेंद्र के हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ी। धर्मेंद्र ने देखा कि रानी हिल नहीं रही हैं। उनका शरीर लहूलुहान था। खून बिस्तर पर फैल रहा था। धर्मेंद्र को अचानक होश आया। उन्होंने रानी के शरीर को बिस्तर पर ही छोड़ दिया और उस पर एक कंबल डाल दिया। इसी बीच शोर सुनकर बेटी नीचे आई तो मां की हालत देखकर चीख पड़ी। उसकी चीख सुनकर दादी नीचे आईं और मोहल्ले के लोग भी जमा हो गए। थोड़ी देर में इंदरगंज थाने से पुलिस की गाड़ी मौके पर पहुंची। जबकि धर्मेन्द्र मौके से भाग गया। उसने बाजार जाकर शराब की बोतल खरीदी और चुपके से अपने घर के पीछे वाले कमरे में बैठकर शराब पीने लगा। बाहर पुलिस और पड़ोसी इकट्ठे थे। रानी का शव पोस्टमार्टम के लिए ले जाया गया। परिजन रो रहे थे। पुलिस धर्मेंद्र की तलाश कर रही थी, लेकिन उन्हें संदेह नहीं था कि वह घर में ही छुपा शराब पी रहा है।

रात भर की तलाशी के बाद, पुलिस को धर्मेंद्र के घर में होने की आशंका हुई। इंदरगंज थाना प्रभारी दीसि तोमर ने तय किया कि घर की दोबारा तलाशी ली जाए। सुबह चार बजे, पुलिस ने घर की तलाशी शुरू की। जब वह अंधेरे कमरे में पहुंचे, तो उन्होंने धर्मेंद्र को टूटी खाट पर सोते हुए पाया। उसके कपड़ों पर खून के धब्बे थे। पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। धर्मेंद्र ने बिना किसी प्रतिरोध के आत्मसमर्पण कर दिया। उसकी आंखों में कोई पछतावा नहीं था। पूछताछ में उसने बताया कि वह मेरी पत्नी थी, लेकिन वह मेरे साथ विश्वासघात कर रही थी। मैंने उसे कई बार दूसरे मर्दों के साथ देखा। खासकर एक युवक के साथ, जो उसे स्कूल से छोड़ने आता था। मैंने उसे कई बार टोका, लेकिन वह नहीं मानी। इससे मुझे गुस्सा आ गया। वह मेरी बात नहीं मान रही थी। वह उस युवक का नाम नहीं बता रही थी। मैंने सोचा कि अगर वह मर जाएगी, तो किसी और के साथ नहीं जाएगी। पुलिस ने धर्मेन्द्र की निशानदेही पर घर के बाहर छुपा कर रखी मोगरी जब्त कर उसे अदालत में पेश किया जहां से उसको जेल भेज दिया गया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

...पृष्ठ 3 का शेष

उन्हें बुला लीजिए।

क्यों क्या मैं जानवर हूं जो तुम्हें खा जाऊंगा। फिर पति के मौजूद रहते तुम मेरे सामने अपनी साड़ी ऊपर कर सकती हो। यह कहते हुए उसने अपने हाथ से रेखा की साड़ी ऊपर कर अपनी हथेली पैरों के जोड़ पर रखकर जांच के बहाने रेखा के शरीर को सहलाने लगा। थोड़ी देर में रेखा समझ गई कि यह एक डॉक्टर की जांच का तरीका नहीं है। इसलिए उसने मामा सुसर का हाथ जोर से झटकते हुए कहा मुझे नहीं करवाना इलाज।

ऐसे कैसे नहीं करवाना, बीमार रहकर मेरे भांजे की जिंदगी खराब नहीं करने दूंगा में, ऐसा कहते हुए मनोज ने एक हाथ से उसका मुंह दबा दिया और दूसरे हाथ से उसके साथ छेड़खानी करने लगा। अब तक रेखा समझ चुकी थी कि मनोज इलाज करने नहीं बल्कि कुछ और करने की नीयत से आया है इसलिए उसने खुद को उसकी पकड़ से बचाने की कोशिश की लेकिन मामा सुसर ने बेशर्मी के साथ अपने भांजी बहू के साथ बलात्कार कर डाला। अपना पाप पूरा कर मनोज किसी को यह बताने पर जान से मारने की धमकी देते हुए दूर हुआ तो रेखा जोर से चीख पड़ी। रेखा की चीख सुनकर पीड़िता का पति राजेश और उससे सास-ससुर कमरे में दौड़े आए। रोती-बिलखती पीड़िता ने जब पूरी घटना सुनाई, तो रेखा के ससुर तुरंत हाथ जोड़कर खड़े हो गए और कहने लगे, बेटी, यह बात किसी से मत कहना। मामा तो हमारे घर का सम्मानित सदस्य है। शायद शराब के नशे में ऐसा कर बैठा। हम उसे समझा देंगे। लेकिन रेखा पुलिस में जाने की बात पर अड़ी रही। इसके बाद उसके पति और सास-ससुर ने मिलकर पुलिस के बजाए पंचायत बैठाने का भरोसा दिलाया। दूसरे दिन मामले को पंचायत के सामने रखा गया, जहां बूढ़े पुरुषों ने फैसला सुनाया कि डॉक्टर मामा से माफी मांगवाकर मामला खत्म कर दिया जाए। रेखा समझ गई कि पंचायत के नाम पर उसके पति एवं सास-ससुर ने उसके साथ धोखा किया है इसलिए वह एफआईआर की बात पर डटी रही तो परिवार ने उसे डराना-धमकाना शुरू कर दिया। ससुर का कहना था कि ऐसी छोटी-मोटी बातें हर परिवार में होती रहती हैं। औरत को चुप रहना आना चाहिए। लेकिन रेखा न्याय चाहती थी इसलिए वह बेटी को लेकर मायके आ गई। लेकिन मायके वालों ने भी उसे समझाने की कोशिश की। इससे रेखा समझ गई कि उसे अपनी लड़ाई खुद लड़ना होगी इसलिए उसने स्वयं जाकर पानीपत के तहसील कैंप थाना में शिकायत दर्ज कराई। जिसके बाद आरोपी डॉक्टर को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

• • •

...पृष्ठ 5 का शेष

थोड़ी देर बाद अंकुश ने उसे फिर फोन कर कहा लॉबी में क्यों बैठी हो? सामने लिफ्ट हैं, लिफ्ट एरिया में आ जाओ। मैं नीचे आ रहा हूं। लिफ्ट एरिया में भारद्वाज उसे लेने आए। वह सामान्य कपड़ों में थे। आते ही उन्होंने कहा चलो ऊपर चलते हैं। मैंने एक कमरा ले लिया है वहां शांति से बात हो जाएगी। निशा को अब अजीब लगा लेकिन कोच की बात टालना उसके बस में नहीं था। इसलिए उनके साथ होटल के कमरे में पहुंच गई। जिस सोफे पर निशा बैठी थी उसके ठीक पीछे खड़े होकर अंकुश ने उसे कुछ देर तक नोट्स लिखाने का नाटक किया फिर अचानक दोनों हाथ पहले तो निशा के कंधे पर रखे फिर उसकी टीशर्ट के अंदर डाल दिए।

निशा डरकर सोफे से उठी तो कोच ने उसे एक झटके से अपनी गोद में उठाकर बिस्तर पर गिरा लिया। निशा समझ गई कि सर की नीयत ठीक नहीं है उसने हाथ जोड़कर उनसे छोड़ देने का निवेदन किया तो अंकुश हंसते हुए बोला मैंने तो पहले ही कहा था कि तुम्हारी बॉडी टोन करने के लिए मुझे ही कोई रास्ता निकालना पड़ेगा। फिर तुम्हारा कोच होने के नाते हर मामले में तुम्हें ट्रेंड करना भी तो मेरी जिम्मेदारी है, चेहरे पर जहरीली मुस्कान लिए उसने कहा। निशा ने उसका विरोध किया तो अंकुश ने पहले तो मारपीट की फिर निशा के सारे कपड़े हटाकर खुद भी अपने कपड़े उतारकर उसके ऊपर झुक गया और रोती-सिसकती निशा के साथ बलात्कार कर डाला। इसके बाद अपने पाप की बात किसी को बताने पर उसका कैरियर बर्बाद करने की धमकी देकर उसे कार तक छोड़ दिया। जहां से निशा अपने पिता के आफिस चली गई।

डर के मारे निशा ने घर में यह बात किसी को नहीं बताई। लेकिन उसने शूटिंग पर जाना छोड़ दिया। उसकी उदासी देखकर मां-पिता ने कई बार उससे इसका कारण पूछा लेकिन वह चुप रही। मगर घटना के 22 दिन बाद उस रोज नहाते समय मां द्वारा निशा के सीने पर नाखूनों और दांतों के निशान देख लेने से पूरा मामला खुलकर सामने आ गया। जिसके बाद बलात्कारी कोच को पुलिस ने सलाखों के पीछे डाल दिया।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

• • •

...पृष्ठ 6 का शेष

इसलिए जब शुभम ने देवी के अक्सर विनोद के घर आकर सोने की बात पर ऐतराज किया तो विनोद ने उसे बताया कि देवी उसे ब्लैकमेल करता है क्योंकि उसने मेरे साथ अपने कुछ अश्लील वीडियो बना लिए है। मैं उससे मिलने से मना करता हूं तो वो उन वीडियो को वायरल करने की धमकी देता है। विनोद की यह बात सुनकर शुभम ने कहा कि अगर ऐसा है तो साले का निपटा देते है। इस पर विनोद भी देवी की हत्या करने राजी हो गया।

जिसके बाद योजना बनाकर 28 जनवरी को विनोद और शुभम ने पहले एक दुकान से शराब खरीदी और फिर देवी को फोन कर शराब पीने शारदा पार्क में आने को कहा। विनोद का निमंत्रण पाकर देवी तत्काल शारदा पार्क पहुंच गया जहां विनोद और शुभम ने पहले तो उसे भरपूर शराब पिलाई और जब देखा कि देवी अब उनका विरोध नहीं कर पाएगा तो पहले से खोजकर रखे दो भारी पत्थरों से उसका सिर कुचलकर हत्या करने के बाद उसका पर्स, मोबाइल और मोटर साइकल लेकर भाग गए। बाद दोनों ने यह मोटर साइकल महालक्ष्मी मंदिर के पास सुनसान में खड़ी कर दी जो बाद में पुलिस को उन तक ले आई।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

• • •

...पृष्ठ 8 का शेष

पुलिस ने जब चांदनी पर दबाव बनाया और उससे इस 22 सेकंड की कॉल के बारे में पूछा, तो उसके बयान में उलझन पैदा हो गई। वह कभी कहती कि कॉल आया ही नहीं, कभी कहती कि किसी ने गलत नंबर मिला दिया। इस बीच, पुलिस ने सुधीर के जीजा और अन्य रिश्तेदारों से भी बात की।

इन्हीं पूछताछों के दौरान एक गवाह सामने सतना अस्पताल का एक वार्ड बॉय। उसने बताया कि करीब 25 दिन पहले, चांदनी किसी बीमारी के इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती थी। उस दौरान दो युवक बार-बार उसे मिलने आते थे। एक का नाम बाबा था, दूसरे को सब गबरू कहते थे। वार्ड बॉय ने यह भी बताया कि चांदनी और गबरू के बीच बातचीत और नजरों के आदान-प्रदान से लगता था कि उनके बीच कुछ चक्कर चल रहा है। क्योंकि जब भी गबरू मिलने आता था चांदनी का चेहरा खिल उठता था। इतना ही नहीं उसने एक दो बार गबरू को कंबल के अंदर से बिस्तर पर लेटी चांदनी के शरीर पर हाथ चलाते भी देखा था।

यह जानकारी पुलिस के लिए एक नई दिशा खोलने वाली साबित हुई। उन्होंने गबरू और बाबा की पृष्ठभूमि खंगालनी शुरू की। गबरू का असली नाम दिनेश पटेल था, और वह मूल रूप से मऊगंज जिले के देवरी शिवमंगल सिंह गांव का रहने वाला था। करीब 20 साल पहले उसकी मां सतना चली गई थीं, और तब से वह इंदौर में रहने लगा था। उसका आपराधिक रिकॉर्ड भी था। मऊगंज पुलिस थाने में वर्ष 2020 में चोरी के दो मामलों में उसे जेल भी हो चुकी थी। वह और बाबा इंदौर में साथ काम करते थे और एक वारदात को अंजाम देकर फरार थे। फरारी के दौरान वे सुधीर दहिया के घर में ही छिपे हुए थे!

दूसरी तरफ बाबा के अवैध संबंध मऊगंज के बहुटी गांव की एक युवती रंजना (बदला नाम) से थे। बाबा जब भी कोई वारदात करता तब फरारी अक्सर अपनी इसी प्रेमिका के घर काटता था।

अब पुलिस जांच में धीरे-धीरे, टुकड़े जुड़ने लगे। पुलिस

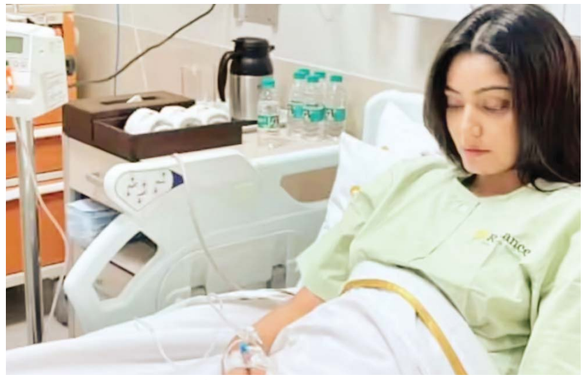

ने चांदनी को दोबारा हिरासत में लिया और कड़ी पूछताछ की। आखिरकार, दबाव में आकर और तथ्यों के सामने, चांदनी ने सब कुछ कबूल कर लिया। चांदनी ने बताया कि अस्पताल में भर्ती होने के दौरान, गबरू उससे मिलने आया करता था। सुधीर के अत्याचार और मारपीट से तंग आ चुकी चांदनी को गबरू का सहारा और दिलचस्पी अच्छी लगी। धीरे-धीरे दोनों के बीच प्रेम संबंध विकसित हो गया। गबरू ने उसे नए सिरे से जीने का सपना दिखाया। चांदनी डिस्चार्ज होकर घर आ गई, और गबरू व बाबा भी उसके घर में कुछ दिन रुके। इसके बाद गबरू और चांदनी एक दूसरे की वासना की आग में जलने लगे। उन्हें जब भी मौका मिलता वे कभी चांदनी के घर में तो कभी गांव के बाहर मिलकर अपनी प्यास बुझाने लगे। कुछ ही दिनों में गबरू चांदनी का दीवाना हो गया। इसलिए एक रोज गबरू ने चांदनी से कहा कि वह उसे और उसकी बेटी को लेकर कहीं दूर चला जाएगा, नई जिंदगी शुरू करेगा। लेकिन चांदनी ने स्पष्ट कर दिया, जब तक मेरा पति जिंदा है, वह मुझे कहीं नहीं जाने देगा। वह हम दोनों को मार डालेगा। हमें तभी साथ रह पाएंगे जब वह इस दुनिया में नहीं रहेगा। यही वह पल था जब पति की हत्या की योजना ने आकार लिया। गबरू और बाबा ने तुरंत हामी भर दी। बाबा ने इसके लिए अपनी दोस्त रंजना सिंह का सहारा लिया, जिसके घर में वे योजना बना सकते थे और हथियार छुपा सकते थे।

29 दिसंबर की सुबह, चांदनी ने सुधीर को एक बड़े प्लान का लालच देकर रीवा जाने के लिए राजी किया। उसने कहा कि रीवा में एक बड़ा शराब का कारोबार होगा, जिसमें एक बार में ही लाखों कमाए जा सकते हैं। लालच में आकर सुधीर सतना से बस पर सवार हुआ। उसे निर्देश दिया गया था कि चोरहटा बायपास पर उतरकर अपने जीजा से मिले। जीजा ने उसे रतहरा ओवरब्रिज तक पहुंचाया, जहां पहले से ही गबरू और बाबा एक बाइक पर उसका इंतजार कर रहे थे।

तीनों शाम को शराब पीते रहे। सुधीर को लगा कि यह सौदे से पहले की पार्टी है, लेकिन उसके लिए यह आखिरी पार्टी साबित होने वाली थी। शाम ढलते ही, तीनों मऊगंज की ओर बाइक पर निकल पड़े। मूल योजना यह थी कि सुधीर को बहुटी के पास स्थित जलप्रपात के पास ले जाकर मारकर शव नीचे फेंक दिया जाएगा, जिससे यह हादसा या आत्महत्या लगे। लेकिन इसी बीच रंजना ने अपने प्रेमी बाबा को फोन कर बताया कि जलप्रपात के आसपास कोई घटना हो जाने से वहां बड़ी संख्या में पुलिस मौजूद है। इसलिए योजना बदली गई। रात करीब 12 बजे, डगडौआ गांव के पास एक सुनसान सड़क किनारे, बाइक रोकी गई। सुधीर, जो शराब के नशे में चूर था, शायद कुछ समझ पाता, इससे पहले ही गबरू ने एक बड़ा चाकू निकाला और उसके गले व शरीर पर बेतरतीब वार कर दिए। बाबा ने उसे पकड़ने में मदद की। सुधीर की चीखें सूनसान रात में गुम हो गईं।

हत्या के तुरंत बाद, गबरू ने सुधीर का ही मोबाइल फोन उठाया और चांदनी को फोन लगाया। बस इतना कहा, काम हो गया। फिर उन्होंने सिम कार्ड निकालकर फेंक दिया, लेकिन फोन को शव के पास छोड़ दिया। इसके बाद गबरू और बाबा सीधे बहुटी गांव में रंजना सिंह के घर पहुंचे। वहां उन्होंने खून से सने कपड़े जलाए, हथियार छुपाया और कुछ देर आराम किया। सुबह होते ही वे प्रयागराज की ओर फरार हो गए।

पुलिस की जैसे ही चांदनी से पूरी जानकारी मिली उसने रंजना को बहुटी गांव में ही गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने उसके घर की तलाशी ली, तो एक संदेहास्पद बाइक बरामद हुई। यह बाइक गबरू और बाबा ने इंदौर में किसी की हत्या करके छीनी थी। दीपावली के समय वे इसे लेकर रंजना के घर आए थे और यहीं छोड़कर चले गए थे। बाइक की पहचान मुश्किल करने के लिए उसका चेसिस नंबर और इंजन नंबर भी मिटा दिया गया था।

रंजना पर हत्या में सहायता, साजिश रचने और अपराधियों को शरण देने के आरोप लगे। चांदनी दहिया को भी गिरफ्तार कर लिया गया। दोनों महिला आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया। हालांकि, इस हत्या के दो मुख्य अभियुक्त गबरू और बाबा की गिरफ्तारी के लिए साइबर सेल और कई जिलों की पुलिस की एक संयुक्त टीम उनकी तलाश में जुटी हुई है।

कहानी पुलिस सूत्रों पर आधारित सभी नाम बदले हुए हैं।

• • •

जबलपुर

नए युवक से दोस्ती करने से रोकने पर समलैंगिक युवक ने की पुराने पार्टनर की हत्या

देवी और शुभम के अलावा 48 वर्षीय विनोद मोहल्ले के कई युवकों को इस अप्राकृतिक लत लगा चुका है।

शौक में गई जान

देवी बेन को 12 साल की उम्र में ही पड़ोस में रहने वाले 30 वर्षीय गे युवक विनोद ने इस हद तक यह बुरी लत लगा दी कि विनोद की खातिर देवी ने शादी तक नहीं की। लेकिन 18 साल तक देवी से रिश्ता रखने के बाद विनोद ने मोहल्ले के अन्य 22 वर्षीय युवक शुभम से संबंध बना लिए थे। देवी ने इसका विरोध किया तो विनोद ने अपने नए प्रेमी शुभम के साथ मिलकर देवी की हत्या कर दी।

वीडियो वायरल करने की धमकी देता था

विनोद का कहना है कि देवी ने उसके साथ गलत संबंध बनाते हुए चोरी छुपे वीडियो बना लिए थे। जिसके बाद उन्हें वायरल करने की धमकी देकर मेरे साथ गलत संबंध बनाता था। अपितु पुलिस को देवी के मोबाइल में ऐसा कोई वीडियो नहीं मिला है।

मौके पर जांच करती पुलिस

तीस जनवरी की सुबह के कोई छह-साढ़े छह बजे का वक्त था जब जबलपुर में रांझी इलाके के रामनगर पार्क के पास रहने वाले रांझी थाना टीआई विजय सिंह परस्ते को इलाके के एक व्यक्ति ने उनके घर के सामने पार्क के पास कच्ची सड़क पर किसी युवक का रक्त रंजित शव पड़े होने की खबर थी। अपने निवास के सामने कुछ दूरी पर शव पड़ा होने की खबर पाकर टीआई श्री परस्ते तुरंत ही थाने को घटना की सूचना देकर मौके पर पहुंच गए जहां थोड़ी ही देर में थाने पुलिस बल भी मौके पर आ पहुंचा।

पार्क के पास से होकर गुजरने वाली कच्ची सड़क पर लगभग 30-32 साल के युवक के सिर कुचले शव के पास दस-बारह किलो वजनी दो पत्थर भी खून से सने पड़े थे। जाहिर सी बात थी कि युवक की हत्या इन्हीं पत्थर से सिर कुचल कर की गई थी। पत्थर गिनती में दो थे इससे यह भी साफ था कि युवक के हत्यारे गिनती में दो या इससे अधिक रहे होंगे। पुलिस ने शव के आसपास सुराग की तलाश की तो मौके से लगभग तीस मीटर की दूरी पर तीन डिस्पोजल गिलास, पानी की बॉटल और सिगरेट का पैकेट पड़ा मिला। जिससे यह लगभग साफ हो गया कि शराबखोरी के दौरान हुए विवाद में युवक की हत्या हुई है। मामला सीधे-सीधे हत्या का था इसलिए खबर पाकर मौके पर एएसपी संजय अग्रवाल और सीएसपी रांझी एमपी प्रजापति के अलावा एफएसएल की टीम और डॉग स्क्वाड भी पहुंच गया। लेकिन इससे कोई ज्यादा मदद नहीं मिली। जिसके चलते एसपी जबलपुर सिद्धार्थ बहुगुणा ने रांझी टीआई विजय सिंह परस्ते के नेतृत्व में एक टीम मामले की जांच के लिए गठित कर दी।

बारह साल की उम्र में सिखा दी थी अनैतिकता

आरोपी विनोद उम्र में देवी से 18 साल बड़ा है। उसने पत्नी की मौत के बाद उस समय देवी को अपने संग संबंधो का चस्का लगा दिया था जब वह केवल 12 साल का था। बाद में देवी को यह अप्राकृतिक खेल ऐसा भाया कि उसने शादी तक नहीं की।

नए दोस्त का विरोध करता था

विनोद ने 18 साल तक देवी के साथ संबंध बनाए रखने के बाद अब उससे दूरी बनाना शुरू कर दिया था। दरअसल देवी अब 30 का हो चुका था। इसलिए विनोद ने 22 साल के एक दूसरे युवक शुभम को अपने साथ गलत आदत डाल दी थी। इस बात का शक देवी को हो चुका था और वह इसके लिए विनोद को बदनाम करने की धमकी देता था। जिसके चलते शुभम के साथ मिलकर विनोद ने उसकी हत्या कर दी।

सिद्धार्थ बहुगुणा तत्कालीन एसपी

आरोपियों तक पहुंचने के लिए पहली जरूरत शव की पहचान की थी। जिसमें मौके पर सफलता न मिलने के कारण पुलिस शव के फोटो सभी थानों को भेजने के अलावा सोशल मीडिया पर भी वायरल कर दिए। इससे तो पुलिस का काम आसान नहीं हुआ मगर इसी बीच इलाके के महालक्ष्मी मंदिर के पास खड़ी मिली एक लावारिस बाइक को शव से जोड़ते हुए जब पुलिस आगे बढ़ी तो गाड़ी के रजिस्ट्रेशन नंबर के आधार पर उसकी मालकिन गोकुल नगर निवासी एक महिला तक पहुंची जिसने शव को देखते की उसकी पहचान अपने तीस वर्षीय भाई देवी बेन के रूप में कर दी। देवी 28 जनवरी की शाम को घर से निकलने के बाद वापस नहीं आया था। शव की पहचान हो जाने पर पुलिस ने उसके ठिकानों पर जाकर पूछताछ की तो पता चला 28 जनवरी की रात लगभग 8 बजे देवी को शांतिनगर रांझी निवासी विनोद रजक और शुभम के साथ घूमते देखा गया था।

यह महत्वपूर्ण जानकारी थी इसलिए पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए 48 वर्षीय विनोद रजक उर्फ शेरा और 22 वर्षीय शुभम पटेल को उनके घरों से उठाकर पूछताछ की जिसमें दोनों देवी की हत्या के मामले में कुछ भी जानने से इंकार करते रहे। लेकिन जब पुलिस ने दोनों को अलग-अलग तरह के सवाल पूछे तो दोनों के जबाव में बड़ा अंतर पाए जाने पर पुलिस ने उनके साथ अपने तरीके से पूछताछ शुरू कर दी। जिससे जल्द ही विनोद और शुभम ने समलैंगिक संबंधो के प्रेम त्रिकोण में हुई देवी की हत्या की पूरी कहानी सुना दी जो इस प्रकार से सामने आई।

कोई तीस साल पहले विनोद रजक, गोकुल नगर में देवी बेन के घर के पास ही रहता था। विनोद उम्र में देवी से साढे 18 साल बड़ा है। देवी का जन्म विनोद के सामने ही हुआ था। उसने देवी को अपनी गोद में भी खिलाया था। विनोद उसे काफी चाहता था इसलिए वह भी विनोद को भैया-भैया कहते हुए उसके पीछे पड़ा रहा था। देवी जब लगभग 11 साल का था तभी इस दौरान विनोद की पत्नी का निधन हो गया। इसके बाद विनोद, देवी को अक्सर अपने ही घर में साथ सुलाने लगा।

पूछताछ में सामने आया है कि विनोद वास्तव में 'गे' है जिसे युवकों से संबंध बनाने का पुराना शौक था। इसलिए जब उसने देखा कि देवी 12 साल होकर उसके साथ संबंध बना सकता है तो उसने देवी को साथ सुलाकर धीरे-धीरे अपने साथ संबंध बनाने को राजी कर लिया। संयोग से देवी को भी समलैंगिक संबंध की ऐसी लत लग गई कि फिर उसने घर वालों के दबाव के बाद भी शादी नहीं की। उसका ज्यादातर समय विनोद रजक के साथ बीतने लगा। चूंकि विनोद के गे होने की जानकारी मोहल्ले में नहीं थी इसलिए परिवार वालों ने भी उनकी दोस्ती पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। फिर विनोद, देवी से उम्र में काफी बढ़ा था। उसने देवी को अपनी गोद में तक खिलाया था इसलिए ऐसे में कोई नहीं सोच सकता था कि विनोद, देवी को कौन सा खेल खिला रहा है।

12 साल की उम्र से विनोद रजक की वासना की पूर्ति कर रहा देवी अब तीस साल का होने जा रहा था। इससे देवी के मन में तो विनोद की चाहत कम नहीं हुई थी लेकिन विनोद अब किसी कम उम्र के युवक की तलाश करने लगा था। इसी बीच विनोद रजक देवी का मोहल्ला छोड़कर रांझी के शांति नगर में आकर रहने लगा। यहां उसने जल्द ही इलाके में रहने वाले 22 वर्षीय शुभम से दोस्ती कर उसे भी अपने साथ वैसे ही संबंध बनाने का राजी कर लिया जैसे 18 साल पहले देवी को राजी किया था। शुभम के साथ अप्राकृतिक संबंध बनने के बाद विनोद रजक अपने पुराने पार्टनर देवी से मिलने में कतराने लगा। देवी अभी भी अक्सर रात में सोने के लिए विनोद के घर आता था। इससे विनोद अपने नए दोस्त शुभम ने मुलाकात नहीं कर पाता था।

शेष पृष्ठ 7 पर...

पानीपत

मेडिकल जांच के बहाने पर मामा ससुर ने किया भांजे की पत्नी संग बलात्कार

बदनीयत मामा ससुर

पानीपत के एक प्रतिष्ठित कॉलोनी में रहने वाला यह परिवार बाहर से आदर्श लगता था। पति एक सफल प्रोफेशनल और उसकी खूबसूरत पत्नी रेखा (बदला नाम)गृहिणी, एक छोटी सी बेटी और उसके दादा-दादी। रेखा की शादी इस परिवार के इकलौते बेटे के संग 2020 में हुई थी।

इलाज के नाम पर किया दुष्कर्म

जांच के दौरान पीड़िता ने बताया कि बच्ची के जन्म के बाद उसे पेट में दर्द रहने लगा था। पति के साथ संबंध बनाने पर यह दर्द काफी बढ़ जाता था। इसी बात का फायदा उठाकर मामा ससुर जो पेशे से डॉक्टर हैं ने इलाज के बहाने बलात्कार किया। उसका कहना है कि मामा ससुर ने मुझे डर दिखाया कि अगर मेरी बीमारी ठीक नहीं हुई तो मेरा पति मुझे तलाक दे देगा। इसी बहाने उसने जांच के नाम पर मुझे गलत जगहों पर छुआ और फिर जबरन दुष्कर्म किया।

ती न साल तक सब कुछ ठीक चला लेकिन बेटी के जन्म के बाद रेखा कि पेट में असहनीय दर्द की शुरूआत हुई। इलाज कराया गया लेकिन मर्ज उसका बढ़ता ही रहा। स्थिति यह बन गई कि दर्द में थोड़ा बहुत फायदा होता भी तो जैसे ही पति उसे प्यार करता उसका दर्द फिर उभर आता। इसलिए दर्द के डर से रेखा महीनों तक पति को अपने पास आने से रोकने लगी। इससे दोनों के बीच तनाव बढ़ने लगा जिससे रेखा का पति राजेश अक्सर उससे दूर अलग कमरे में सोने लगा था।

राजेश का एक हमउम्र मामा था मनोज जो पेशे से डॉक्टर था। राजेश ने कई बार रेखा से कहा था कि न हो तो एक बार मामा को दिखा देते है। फीस भी नहीं लगेगी और वे घर जैसा तुम्हारा इलाज भी कर देंगे। लेकिन रेखा जानती थी कि डॉक्टर की जांच के दौरान लगभग वेपर्दा होना पड़ता है इसलिए वह तैयार नहीं होती थी। इस बात को लेकर राजेश और भी गुस्सा हो जाता था। उसका कहना था कि वो रिश्ते में मामा जरूर है लेकिन मेरे तो दोस्त जैसे हैं।

रेखा के मामा ससुर मनोज अक्सर घर आते रहते थे। राजेश हर बार रेखा ने मामा को अपनी बीमारी दिखाने कहता था लेकिन रेखा टाल देती थी। जुलाई महीने में मामा मनोज एक बार फिर रेखा की ससुराल में आए। रेखा जानती थी कि मामा के आने पर राजेश उनके साथ बैठकर शराब पीता है और फिर दोनों मामा-भांजे पार्टी करते हुए बाहर के कमरे में सो जाते थे। इसलिए रेखा भी उस रोज घर का काम निपटा कर अपनी बेटी के साथ आकर अंदर कमरे में सो गई जबकि राजेश और मनोज बाहर के कमरे में अपनी पार्टी करने लगे। रेखा के सास ससुर भी अपने कमरे में जाकर सो गए।

आधी रात के वक्त रेखा को अपने पेट पर किसी के हाथ का स्पर्श महसूस हुआ। उसे लगा कि शायद शराब के नशे में उसके पति की उत्तेजना जाग जाने पर वह कमरे में घुस आया है। इसलिए पति के प्यार के बाद होने वाले दर्द के डर से वह कांप उठी। लेकिन इसी बीच उसे जब वह हाथ उसके ब्लाउज की तरफ बढ़ा तो रेखा ने उस हाथ के ऊपर हाथ रखते हुए फुसफुसाते हुए कहा मामा सो गए क्या?

पगली में राजेश नहीं मामा ही हूं, कमरे आया युवक जिसे रेखा पति समझ रही थी ने कहा तो वो चौंक कर बिस्तर पर उठकर बैठने के बाद मामा सुसर को कमरे में देखकर चीखने जा रही थी कि मनोज ने उसके मुंह पर हाथ रखते हुए बोला- चुप रहो दीदी-जीजाजी जाग गए तो पूरी योजना फेल हो जाएगी। राजेश ने ही मुझे तुम्हारे पेट दर्द के इलाज के लिए भेजा है। उसका कहना है कि तुम्हारे पेट दर्द के कारण तुम उसके साथ महीनों तक संबंध नहीं बनाती।

मामा ससुर के मुंह से ऐसा सुनकर रेखा शर्म से पानी हो गई। फिर भी उसने किसी तरह हिम्मत जुटाकर कहा मुझे कोई इलाज नहीं करवाना।

सोच लो, राजेश तुम्हारी बीमारी के कारण तुम्हें तलाक देने का पूरा मन बना चुका है। बेचारा करे भी क्या अभी जवान है लेकिन उसे अपनी जवानी बिस्तर पर उपयोग करने के बजाए बाशरूम में जाया करना पड़ रही है। वो तो मैने उसे समझाया कि रेखा अच्छी लड़की है इसलिए उसे तलाक देने से पहले एक बार मुझे उसकी बीमारी समझकर इलाज करने दो शायद वह ठीक हो जाए। इसलिए राजेश और मैने यह योजना बनाई थी कि चुपचाप तुम्हारा चेकअप कर मैं सुबह उसे दवा लिखकर दे दूंगा।

राजेश द्वारा तलाक देने की बात सोचने का सुनकर रेखा अंदर तक कांप गई। उसे लगा कि तलाक मिले इससे तो अच्छा है कि मामा से इलाज करवा ले। इसलिए उसने कहा सचमुच मामा अगर आपने मेरा मर्ज ठीक कर दिया तो मैं जिंदगी भर आपका अहसान मानूंगी। मैं खुद भी इस बीमारी से तंग आ चुकी हूं। किस पत्नी को अच्छा लगता है अपने पति को बार-बार मना करना लेकिन मेरी मजबूरी है।

राजेश का संग करने के बाद बहुत दर्द होता है क्या तुम्हें?

हां।

कहां?

यहां पेट में नीचे की तरफ।

ठीक है लेट जाओ मै चेक करता हूं।

रेखा बिस्तर पर लेट गई तो मामा ससुर मनोज उसके पेट पर हाथ घुमाकर जांच करने का नाटक करने लगा। रेखा को अजीब लग रहा था क्योंकि मामा पूरी जांच अंधेरे में कर रहा था और दर्द पेट में होता था जबकि मामा ससुर की हथेलियां बार-बार उसके ब्लाउज में भीतर की तरफ आ रही थीं। रेखा ने लाइट जलाने को कहा तो मनोज बोला नहीं में ऐसे ही जांच कर लूगा। लाइट जलाने से दीदी-जीजाजी जाग जाएंगे।

रेखा रिश्ते का लिहाज कर शर्म से दोहरी हुई जा रही थी यह देखकर मनोज बोला शर्माओ मत मैं इस समय मामा ससुर नही डॉक्टर हूं। इसलिए डॉक्टर से शर्म नहीं की जाती। मनोज की बात से रेखा को थोड़ी राहत मिली लेकिन रात के अंधेरे में मामा ससुर का यूं उसकी जांच करना समझ में नहीं आ रहा था। फिर उसे ये भी लग रहा था कि अगर राजेश ने मामा ससुर को भेजा है तो वह खुद साथ क्यों नहीं आया।

इसी बीच थोडी देर बाद मामा ससुर ने उससे साड़ी ऊपर करने को कहा। रेखा ने ऐसा करने से मना किया तो मनोज बोला इलाज करवाना है या तलाक लेकर अपनी जिंदगी खराब करना है।

मायके से भी नहीं मिला साथ

पूरे मामले में दुखद बात यह रही कि एक तरफ जहां बहू से बलात्कार करने वाले मामा ससुर को बचाने के लिए ससुराल वाले जिसमें पति भी शामिल है रेखा की आवाज दबाने का प्रयास करते रहे वहीं जब न्याय की आस में रेखा मायके आई तो मायके वालों ने भी जो हुआ उसे भूलने की ही सलाह दी। जिससे मजबूर होकर रेखा ने अकेले ही थाने में जाकर मामा ससुर के खिलाफ बलात्कार का मामला दर्ज करवाया।

शेष पृष्ठ 7 पर...

पेज एक का शेष

फरीदाबाद में नाबालिग शूटर के यौन शोषण का चर्चित मामला

आई ट्रेंड यू...

आरोपी कोच

मां से मिली हिम्मत ने मानों निशा में नहीं जान फूंक दी हो। जिससे उसने टूटे शब्दों, हिचकियों और आंसुओं के बीच, वह सब अपनी मां से कह डाला जो 22 रोज पहले उसने शहर की एक फाइव स्टार होटल के कमरे में भोगा था। बेटी की व्यथा सुनकर सीमा स्तब्ध रह गईं। पहले तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। उनका आदर्श, उनकी बेटी का भविष्य संवारने वाला कोच अंकुश भारद्वाज ऐसा कर सकता है। लेकिन फिर उन्होंने निशा की आंखों में छिपे भय, उसके कांपते होंठ और उसके शरीर पर पड़े निशानों को देखा तो उनका खून खौल उठा।

बेटी के साथ एक ऐसे अधेड़ व्यक्ति द्वारा बलात्कार किए जाने की बात सुनकर मां के पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई। बेटी को हिम्मत न बंधाना होती तो शायद वह चक्कर खाकर जमीन पर ही गिर गई होती लेकिन जिंदगी के सबसे खौफनाक दर्द से गुजरी बेटी मां को डरा देख खुद भी और न डर जाए इसलिए उन्होंने अपने आप को संभाला और तुरंत पति को फोन कर घर आने के लिए कहा।

माया सिंह टीआई

थोड़ी देर बाद निशा के पिता रमेश घर पहुंचे तो सीमा ने कांपती आवाज में बेटी के साथ हुए हादसे की पूरी कहानी एक सांस में सुना दी। रमेश ने पहले तो कुछ समझा नहीं। लेकिन जब सीमा ने निशा की बात दोहराई, तो उनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। उनकी बेटी के साथ अंकुश ने ऐसा किया होगा इस बात पर उन्हें भरोसा नही हो रहा था। लेकिन निशा उनके सामने आई, और उसने सिर झुकाकर, टूटी आवाज में कहा, पापा, मां सच कह रही हैं। तो आंसू भरी आंखों से रमेश ने बेटी को दिल से लगा लिया।

अगले कुछ घंटे इस परिवार के लिए मुश्किल भरे थे। फिर काफी सोच विचार के बाद कानून की मदद लेने का फैसला लिया गया। लेकिन डर था कि शायद उन्हें न्याय न मिले। क्योंकि भारद्वाज एक प्रभावशाली आदमी था। शूटिंग में निशा का करियर भी दांव पर लग सकता था। लेकिन जब निशा ने कहा कि अगर मेरे साथ बुरा करने वाले को आप लोगों ने माफ कर दिया तो मैं आप दोनों को जिंदगी भर माफ नहीं कर सकूंगी।

बेटी की यह बात माता-पिता के सीने को चीर गई इसलिए सुबह होते ही तीनों फरीदाबाद के पुलिस स्टेशन पहुंचे। निशा के हाथ में एक लिखित शिकायत थी, जिसमें उसने हर छोटी-बड़ी बात विस्तार से लिखी थी। वहां मौजूद महिला सब इंस्पेक्टर सीमा की बात सुनकर गंभीर हो गईं। वह निशा को उसकी मां के साथ अलग कमरे में ले गईं जहां निशा ने उसे पहले दिन से लेकर 16 दिसंबर की उस काली शाम तक की पूरी कहानी सुना दी जिस रोज उसके शूटिंग कोच अंकुश ने उसके साथ बलात्कार किया था।

निशा की रिपोर्ट पर पुलिस ने तुरंत कार्रवाई शुरू की। न केवल आरोपी की गिरफ्तारी के लिए एक विशेष टीम गठित की गई बल्किहोटल से सीसीटीवी फुटेज जमा करने और आरोपी के मोबाइल फोन रिकॉर्ड्स ट्रैक करने की कवायद भी साथ-साथ शुरू कर दी गई।

> **शूटर निशा के साथ रेप का यह मामला पहला नहीं है, चंद रोज पूर्व भी यहां की होटल ग्रैंड में भवानी राजस्थान से आई एक महिला शूटर के साथ गैंग रेप को अंजाम दिया गया था। इस मामले में पीड़ित रिवाड़ी की सहेली ने साजिश रचकर अपने प्रेमी और उसके दो दोस्तों से सहेली का सामूहिक बलात्कार करवाया था।**

इस बीच किसी तरह खबर लग जाने से अंकुश भारद्वाज गायब हो गया। उनका फोन भी स्विच ऑफ था और घर खाली। पुलिस को शक था कि वह किसी दूसरे शहर में छुपा हो सकता है। इसलिए उसके रिश्तेदारों पर नजर रखने के अलावा बैंक अकाउंट्स पर भी नजर रखी जाने लगी।

इधर निशा के लिए, अगला कदम मेडिकल जांच था। मेडिकल के दौरान निशा की आंखें छत से चिपकी रहीं। उसने खुद को उस लड़की से अलग कर लिया, जिसका शरीर चिकित्सकीय रूप से जांचा जा रहा था। वह एक ऊपर से देखने वाली प्रेत बन गई। जांच के दौरान नाबालिग निशा के साथ शारीरिक संबंध बनाए जाने के पुख्ता सबूत मिले। जिसके आधार पर आरोपी के खिलाफ बलात्कार के अलावा पॉक्सो एक्ट के तरह भी मामला दर्ज कर लिया गया।

पुलिस ने होटल के सीसीटीवी फुटेज जमा किए। फुटेज में निशा और भारद्वाज को एक साथ लिफ्ट में जाते, और फिर लगभग दो घंटे बाद अलग-अलग निकलते देखा जा सकता था। निशा के चेहरे पर दर्द और शर्म की छाया साफ दिखाई दे रही थी। आरोपी के खिलाफ आरोप सिद्ध करने के लिए सीसीटीवी फुटेज को एक और महत्वपूर्ण सबूत के तौर पर पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया। इस दौरान निशा के पुलिस के पास पहुंच जाने की खबर सुनकर फरार हो गया। इसलिए पुलिस ने उसे गिरफ्तार करने के लिए एक साथ कई टीम मैदान में उतार दीं।

पुलिस की विशेष टीम ने पता लगाया कि भारद्वाज हरियाणा के एक छोटे से कस्बे में, अपने एक रिश्तेदार के घर में छिपे हुए थे। उन्होंने अपना लुक बदल लिया था, दाढ़ी रख ली थी। लेकिन मोबाइल टावर की लोकेशन ट्रैकिंग और एक सूचना के आधार पर, पुलिस ने उन्हें घेर लिया। गिरफ्तारी शांतिपूर्वक हुई। भारद्वाज ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। मीडिया के सामने लाए जाने पर, उन्होंने अपना चेहरा ढक लिया था। उनके वकील ने तुरंत जमानत की अर्जी दायर कर दी, यह कहते हुए कि आरोप झूठे हैं और उनके क्लाइंट को बदनाम करने की साजिश है।

demo pic.

> 16 वर्षीय निशा ने शूटिंग कोच अंकुश भारद्वाज के निर्देशन में निशानेबाजी के गुण सीखते वक्त कभी इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि वह खुद अंकुश भारद्वाज के 'निशाने' पर है। नाबालिग निशा की इसी मासूमियत का फायदा उठाकर अंकुश ने पहले तो उसे निशानेबाजी में बहुत आगे तक ले जाने के सपने दिखाए और जब निशा उसके दिखाए सपनों को जीने लगी तो शातिर अंकुश ने एक रोज उसका कैरियर बर्बाद कर देने की धमकी देकर निशा को अपनी हवस का शिकार बना डाला।

demo pic.

अब मामला कोर्ट में था। पहली सुनवाई में, जमानत अर्जी खारिज हो गई। जज ने कहा कि आरोप गंभीर हैं, और अभियुक्त प्रभावशाली व्यक्ति है, इसलिए गवाहों पर दबाव डालने या भागने का जोखिम है। भारद्वाज को जेल भेज दिया गया। जिसके बाद एक शूटिंग कोच द्वारा अपनी नाबालिग ट्रेनी के यौन शोषण की कहानी इस प्रकार समाने आई।

निशा गोली चलाना सीख रही थी, लेकिन जिस गोली ने उसे भेदा, वह रेंज से नहीं, बल्कि उसी के विश्वास के अंधेरे कोने से आई थी। फरीदाबाद के एक शांत, मध्यम-वर्गीय इलाके के तीन-कमरे के फ्लैट में, सोलह वर्षीय निशा अपनी मां सीमा और पिता रमेश (तीनों बदले नाम हैं) के साथ रहती थी। निशा को बचपन से ही निशानबाजी का शौक था।

उसके लिए शूटिंग कोई खेल नहीं, एक साधना थी। 2017, नौ साल की उम्र में, जब उसके पिता उसे पहली बार दिल्ली की करणी सिंह शूटिंग रेंज ले गए, तो राइफल का वजन उसकी नन्हीं बाहों के लिए बहुत था, लेकिन निशाना लगाने का जुनून उसकी आंखों में बहुत बड़ा था। वह चुपचाप, अनुशासित, अपने से बड़े खिलाड़ियों को देखती रहती। रेंज के कोच ने उसकी प्रतिभा को पहचानने में देर नहीं लगी।

साल दर साल, निशा ने इस खेल में अपना नाम बनाया। जिला स्तर, राज्य स्तर, और फिर राष्ट्रीय स्तर पर जूनियर प्रतियोगिताओं में पदकों की झड़ी लगा दी। उसके माता-पिता, रमेश और सीमा, गर्व से फूले नहीं समाते। उनकी बेटी न केवल प्रतिभाशाली थी, बल्कि अविश्वसनीय रूप से अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित भी थी। सुबह चार बजे उठना, स्कूल, फिर रेंज पर अभ्यास, और रात में पढ़ाई - यह उसकी दिनचर्या थी। उसकी दुनिया दो चीजों के इर्द-गिर्द घूमती थी, किताबें और अपनी राइफल।

वर्ष 2025 में निशा पर जूनियर से सीनियर स्तर पर जाने का दबाव था। उसके कोच ने पिता को सुझाव दिया, निशा काफी होनहार है अब आप इसे किसी बेहतर कोच से ट्रेनिंग दिलवाएं तो बेटी के भविष्य के लिए बेहतर होगा। शूटिंग कोच के तौर पर अंकुश भारद्वाज एक जाना-माना नाम था। कई अंतरराष्ट्रीय पदक जीत चुके शूटरों को अंकुश ने ही तैयार किया था। जाहिर है कि अंकुश की फीस भी बहुत ज्यादा थी लेकिन बेटी के भविष्य के लिए रमेश ने किसी तरह जोड़-तोड़ कर फीस का इंतजाम कर निशा को भारद्वाज के संरक्षण में देने का फैसला किया। उनके लिए, यह बेटी के सपने को पंख देने का एकमात्र रास्ता था।

जुलाई 2025 में पहली मुलाकात में, अंकुश भारद्वाज एक करिश्माई, आत्मविश्वास से भरे पेशेवर लगे। उन्होंने निशा के फुटेज देखकर कहा मेरे साथ काम करना आसान नहीं होगा। मुझे अनुशासन और अंधा विश्वास चाहिए। अंकुश की बात पर निशा ने उत्साह से सिर हिलाया। अच्छी निशानेबाज बनने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार थी।

अंकुश की देखरेख में निशा तेजी से अपने खेल में आगे बढ़ने लगी। वह उसे कभी देहरादून, कभी पटियाला, कभी मोहाली में होने वाले विशेष कैंप या एक-दिवसीय कोचिंग सत्रों के लिए बुलाते। हर बार, निशा सुबह जाती और शाम तक लौट आती। निशा को लगता कि अंकुश सर यह सब उसके भले के लिए करते हैं।

लेकिन धीरे-धीरे, भारद्वाज का व्यवहार बदलने लगा। रेंज में ट्रेनिंग के दौरान वह निशा का विशेष ध्यान रखने लगे। कोचिंग के दौरान उसकी पीठ ठोंकना, बार-बार उसके कंधे पकड़कर स्टांस सही करते इस दौरान उनके हाथ कई बार निशा की पीठ पर सरकता तो कभी कभी आगे की तरफ गले से काफी नीचे तक पहुंच जाता। निशा को यह सब अजीब लगता, लेकिन वह इसे प्रोफेशनल ट्रेनिंग का हिस्सा मानकर अंकुश की नीयत पर शक नहीं करती, न ही उनकी ऐसी हरकतों पर गौर करती।

धीरे-धीरे अंकुश उसे देर शाम तक रेंज में रोकने लगे। इस दौरान वह उसे ट्रेनिंग देने के बजाए अपनी केबिन में बैठाकर उससे बातें करते। इस दौरान वह बात तो खेल से ही शुरू करते थे लेकिन दो पांच मिनिट बाद ही व्यक्तिगत बातों पर आ जाते थे। एक दिन उन्होंने बातों-बातों में निशा से पूछा- तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड है?

नो सर। निशा ने छोटा सा उत्तर दिया।

क्या बात कर रही हो, तुम जैसी सुंदर लड़की का कोई प्रेमी न हो, इस बात पर मैं तो भरोसा नहीं कर सकता। तुम झूठ बोल रही हो।

नहीं सर सच यही है।

कमाल है तुम्हारा फिगर देखकर तो लगता है कि तुम किसी न किसी लड़के के साथ गहरे रिश्ते में हो। गहरे रिश्ते का मतलब समझती हो।

हूं..., निशा ने नजरें झुकाए-झुकाए सिर हिलाया।

तो फिर कभी मन नहीं होता तुम्हारा ऐसे किसी रिश्ते का, अंकुश ने बात आगे बढ़ाई लेकिन निशा चुप रही तो वह बोला चलो छोड़ों इस बारे में फिर कभी बात करेंगे। लेकिन हां देखो शूटिंग में तुम्हारा फोकस बहुत अच्छा है लेकिन न जाने क्यों तुम हमेशा तनाव में दिखती हो। इसीलिए मैने यह सब पूछा, तुम या तो किसी को बॉयफ्रेंड बना लो या फिर मसाज करवाना शुरू कर दो। मसाज से बॉडी टोन होगी तो निशाना लगाने में और भी सटीक फैसला लो सकोगी। लेकिन मसाज के लिए निशा ने विनम्रता से मना कर दिया था।

क्यों मसाज में क्या दिक्कत है? अंकुश ने पूछा।

सर हम उसका खर्च नहीं उठा सकते।

जानता हूं इसीलिए बॉयफ्रेंड का पूछा था। बिना खर्च के बॉडी टोन करवाने के लिए बॉयफ्रेंड बहुत काम का साबित हो सकता है। अच्छा ठीक है मैं ही कुछ दूसरा उपाय करुंगा क्योंकि मैं एक रोज ओलम्पिक का गोल्ड मैडल तुम्हारे गले में देखना चाहता हूं।

निशा ने बताया कि उस रोज के बाद सर अक्सर ट्रेनिंग के दौरान मुझसे बहुत सटकर खड़े होने लगे। कई बार राइफल की पकड़ ठीक करने के नाम पर मेरी बाहों के नीचे से अपनी हथेलिया मेरे ब्रेस्ट पर रखने लगे। वह अक्सर बार-बार कहने लगे थे कि वो मुझे शूटिंग में ही नहीं बल्कि हर मामले की ट्रेनिंग देकर ट्रेंड कर देंगे। लेकिन उस समय मेरी समझ में नहीं आता था कि वो किस बात की ट्रेनिंग देने की बात कर रहे हैं।

घटना दिनांक के बारे में निशा ने बताया। 16 दिसंबर से पहले आखिरी बार जब वह उनसे मिली थी, उन्होंने कहा था, तुम्हारा नेशनल मैच आ रहा है। इसके बाद हम गंभीरता से तुम पर काम शुरू करेंगे। ओलंपिक की राह तैयार है। लेकिन इसके लिए तुम्हें और समर्पण चाहिए। मुझ पर पूरा भरोसा भी रखना होगा। तुम्हारे खेले में चमक लाने के लिए मैं वह सब कुछ करने तैयार हूं जो इसके लिए जरूरी है।

निशा का 16 दिसंबर वाला मैच बेहतरीन रहा। निशा ने अपने सीनियर नेशनल स्तर पर पहला रजत पदक जीता। वह खुशी से झूम उठी। रेंज से बाहर निकलते ही उसे अंकुश सर मिले। उन्होंने एक झटके में उसे गले लगा लिया। यह गले मिलना बहुत देर तक चला, सर बार-बार उसकी पीठ पर दबाव देकर निशा के सीने वाला भाग अपने शरीर से ज्यादा से ज्यादा करीब लाने का प्रयास कर रहे थे। निशा ने खुद को कोच से अलग कर लिया।

इसके बाद भारद्वाज ने मुस्कुराते हुए बोला आज तुमने बहुत अच्छा किया। लेकिन इसमें सुधार की गुंजाइश है। चलो, मैच को लेकर डिटेल में चर्चा करते हैं। मैं तुम्हें दोपहर में रेंज पर ही मिलता हूं। कोच के आदेश को टाला नहीं जा सकता था। वह रेंज के एक कोने में बैठकर दोपहर दो बजे का इंतजार करने लगी। दो बजने पर अंकुश तो नहीं आया हां ठीक 2 बजे निशा के मोबाइल पर उसका फोन आ गया। फोन पर कोच ने उससे कहा निशा, मैं रेंज से कुछ दूर, सूरजकुंड रोड पर हूं। यहां एक फाइव स्टार होटल की लॉबी में आ जाओ। यहां शांति है। हम बैठकर मैच का विश्लेषण करेंगे।

कोच की बात सुनकर वह ऑटो लेकर होटल पहुंच कर लॉबी में पड़े सोफे पर बैठ गई।

शेष पृष्ठ 7 पर...

पेड़ से आम गिराते और कंचे खेलते लगा निशानबाजी का शौक

निशा को निशानेबाजी का शौक पेड़ पर पत्थर मारकर आम गिराते और बच्चों के संग कंचे खेलते हुए लगा था। दरअसल निशा के मामा एक गांव में रहते हैं। बचपन में गर्मियों की छुट्टी में निशा अपनी मां के साथ नियमित रूप से मामा के गांव जाती थी। जहां बच्चों के साथ पेड़ पर पत्थर मारकर आम गिराने में उसे महारथ हासिल थी। गांव के बच्चों के जहां दस बार में से कोई एक बार आम गिरता था वहीं निशा का निशाना दस में से आठ बार सटीक बैठता था। मामा के बेटे को कंचे खेलने का शौक था सो उसके साथ कंचे खेलते हुए निशा के निशाने की सब तारीफ करने लगे तब यहीं से उसे निशानेबाज बनने का शौक पैदा हुआ। संयोग से फरीदाबाद में कई शूटिंग रेंज हैं जिससे उसका यह शौक परवान चढ़ा और उसने कई मैडल जीते।

दिखाता था ओलम्पिक गोल्ड मेडल के सपने

निशा ने पुलिस को बताया कि अंकुश भारद्वाज सर अक्सर मुझसे कहते थे कि एक दिन ओलम्पिक गोल्ड मेडल मेरे गले में होगा। वह बार-बार मुझे उनके ऊपर विश्वास रखने और अपनी हर बात मानने का कहते थे लेकिन उस समय मुझे नहीं मालूम था कि वो ऐसा किस मतलब से कहते थे। उसने यह भी बताया कि बलात्कार के बाद यह बात किसी को बताने पर उन्होंने मेरा कैरियर खत्म करवा देने की धमकी दी थी।

कहते थे इससे बॉडी टोन होती है

पीड़िता के अनुसार आरोपी ने मुझे मेरा प्रदर्शन सुधारने के लिए मसाज करवाने की बात कही थी। जब मैंने इसके लिए मना किया तो उसका कहना था कि किसी लड़के को बॉयफ्रेंड बना लो। बॉयफ्रेंड के साथ फ्री में बॉडी टोन हो जाया करेगी। होटल में बुरा काम करते समय भी उन्होंने इसी बात का बहाना लिया था।

फाइव स्टार होटल में बुलाकर किया शोषण

पुलिस के अनुसार आरोपी को इस बात का डर था कि पीड़िता उनकी गलत इच्छा अपनी मर्जी से पूरी नहीं करेगी। इसलिए उसको अपने प्रभाव में लेने के लिए उन्होंने फाइव स्टार होटल का कमरा इस काम के लिए बुक किया था। उसका सोचना था कि फाइव स्टार होटल की चमक-दमक देखकर निशा चुपचाप उसके संग गलत काम करने राजी हो जाएगी।

पुलिस का शक और लड़कियों को भी बनाया होगा शिकार

इस मामले में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी का कहना है कि आरोपी ऊंची पहुंच वाला है। कई बड़े अधिकारियों के बच्चों को उसने फ्री ट्रेनिंग देकर उनसे अच्छे रिश्ते बनाए हुए हैं। इसलिए पुलिस को शक है कि जिस शातिर तरीके से आरोपी ने पीड़िता को शोषण किया है उसी तरह उसने और भी कई लड़कियों को अपना शिकार बनाया होगा। पुलिस के अनुसार पीड़िता के नाबालिग होने के कारण आरोपी के खिलाफ पॉक्सो एक्ट की भी कार्रवाई की गई है।

केवल छह माह पहले आई थी आरोपी से ट्रेनिंग लेने

पीड़िता 2017 से शूटिंग की प्रैक्टिस कर रही है। जुलाई 2025 से ही कोच अंकुश के पास ट्रेनिंग शुरू की थी। कोच उसको शूटिंग प्रैक्टिस के लिए कभी पटियाला, मोहाली, कभी देहरादून बुलाता था। पहले वह रोजाना शाम तक घर लौट आती थी। घटना के दिन वह पर्सनल टैक्सी करके अकेले ही घर से दिल्ली की डॉ. करणी सिंह शूटिंग रेंज गई थी। आरोपी कोच अंकुश भारद्वाज नेशनल कोच था। मामला सामने आने पर नेशनल राइफल एसोसिएशन ऑफ इंडिया ने आरोपी कोच अंकुश भारद्वाज को सस्पेंड कर दिया। आरोपी कॉमनवेल्थ यूथ गेम्स 2008 और हेनोवर में 2016 में इंटरनेशनल शूटिंग चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीत चुका है।

demo pic.